प्रातःक्लास 12/6/68 ओमशान्ति पिताश्री शिवबाबा याद है?

रूहानी बाप कह रहे हैं कि आत्माभिमानी होकर बैठना है अथवा देही–अभिमानी होकर बैठना है। किसको याद करना है? बाप को। सिवाय बाप के और कोई को भी याद न करना है। जबकि बाप से बेहद का वर्सा मिलता है तो उनको ही याद करना है। बेहद का बाप आकर समझाते हैं देही–अभिमानी भव। आत्मा–अभिमानी भव। देह–अभिमान को छोड़ते जाओ। आधा कल्प तुम देह–अभिमानी होकर रहे हो। फिर आधा कल्प देही–अभिमानी होकर रहना है। सतयुग–त्रेता में तुम देही–अभिमानी होकर रहते हो। वहां यह मालूम रहता है हम आत्मा हैं। अभी यह शरीर बड़ा हुआ है, इनको अभी छोड़ते हैं। यह बदली करना है। (सर्प का मिसाल) तुम भी पुराने शरीर छोड़कर, जाकर दूसरे शरीर में प्रवेश करते हो; इसलिए तुमको अभी आत्मा अभिमानी बनना है। वह कब देह अभिमानी बनते नहीं। भल एक बार आते हैं फिर भी देह अभिमानी बनते नहीं; क्योंकि यह शरीर तो पराया लोन लिया हुआ है। इस शरीर से उनकी लागत नहीं है। लोन लेने वाले की लागत नहीं रहती है। जानते हैं यह तो शरीर छोड़ना है। बाप समझाते हैं मैं ही आकर तुम बच्चों को पावन बनाता हूँ। तुम सतोप्रधान थे सो फिर तमोप्रधान बने हो। अभी फिर पावन बनने लिए तुमको अपन साथ योग लगाना सिखाता हूँ। योग अक्षर न कह याद अक्षर ठीक है। याद सिखाता हूँ। बच्चे बाप को याद करते हैं। अभी तुमको भी बाप को याद करना है। आत्मा ही याद करती है। जब रावण राज्य शुरू होता है, तो तुम बच्चे देह अभिमानी बन जाते हो। फिर बाप आकर तुमको देही अर्थात् आत्मा अभिमानी बनाते हैं। देह अभिमानी होने से फिर नाम–रूप में फंस जाते हैं। विकारी बन जाते हैं। नहीं तो तुम सभी थे निर्विकारी। फिर पुनर्जन्म लेते–2 विकारी बन जाते हो। ज्ञान किसको, भक्ति किसको कहा जाता है यह तो बाप ने समझाया है। भक्ति शुरू होती है द्वापर से। जबकि 5 विकारों रूपी रावण की स्थापना होती है। भारत में ही राम राज्य और रावण राज्य कहा जाता है; परंतु यह नहीं जानते कि रावण किसको, राम राज्य किसको कहा जाता है। कितना समय राम राज्य कितना समय रावण राज्य चलता है यह भी कोई नहीं जानते। इस समय भारतवासी हैं तमोप्रधान, पत्थर बुद्धि। पैदा भी भ्रष्टाचार से, विख से होते हैं; इसलिए विशियस वर्ल्ड कहा जाता है। नई दुनियां को वायसलेस वर्ल्ड कहा जाता है। नई दुनियां और पुरानी दुनियां में रात–दिन का फ़र्क है। नई दुनियां में सिर्फ़ भारत ही था। भारत जैसा पवित्र खण्ड कोई बन नहीं सकता। जो पवित्र वही फिर बिल्कुल अपवत्रि बनता है। फिर पवित्र बनना है। तुम जानते हो बरोबर देवी–देवताएं पवित्र थे। फिर पुनर्जन्म लेते–2 अपवित्र बन गये हैं। सबसे जास्ती जन्म भी यही लेते हैं। बाप समझाते हैं मैं बहुत जन्मों के अंत के भी अंत के जन्म में आता हूँ। यह पहला नम्बर ही 84वां जन्म पूरा कर वानप्रस्थ अवस्था में आता है, तब में प्रवेश करता हूँ। त्रिमूर्ति ब्रह्मा, विष्णु, शंकर भी है; परंतु किसको मालूम नहीं है; क्योंकि देह अभिमानी है ना। किसकी भी वायोग्राफी का किसी मनुष्य मात्र को पता नहीं है। पूजा करते हैं; परंतु अंधश्रद्धा; इसलिए बाप ने कहा है अंधे के औलाद अंधे। अभी तुम सजे (सज्जे) बन रहे हो। भक्ति को कहा जाता है ब्राह्मणों की रात और सतयुग–त्रेता है ब्राह्मण का दिन। अभी प्रजापिता ब्रह्मा है तो ज़रूर बच्चे भी होंगे। यह भी समझाया है ब्राह्मणों का कुल होता है, डिनायस्टी नहीं। ब्राह्मण है चोटी। चोटी भी देखने में आते(ती) है। फिर ऊँच ते ऊँच पढ़ाने वाला है परमपिता परमात्मा शिव। उनका नाम एक ही है; परंतु भक्ति मार्ग में अथाह नाम लगा देते हैं। भक्ति में चिह्चटा(चिट्ठा) हो जाता है। कितने चित्र, कितने मंदिर, यज्ञ, तप, दान, पुण्य आदि करते हैं। कहते हैं भक्ति से फिर भगवान मिलता है। किसको मिलता है? जो पहले आते हैं। वही पहले–2 भक्ति शुरू करते हैं। जो ब्राह्मण सो देवता बनते हैं, वही फिर पहले–2 भक्ति मार्ग में जाते हैं। यह हिसाब भी बाप समझाते हैं। भारत बहुत पवित्र था, एक धर्म था, राजा–रानी तथा प्रजा। सर्व गुण सम्पन्न..... देवी–देवता धर्म था। भारत में एक ही आदि सनातन देवी–देवता धर्म था, तो अथाह धन था। बाप याद

दिलाते हैं। पहले–2 तुम आदि–सनातन देवी–देवता धर्म वाले ही 84 जन्म लेते हो। सभी नहीं लेते हैं। है सिर्फ़ 84 जन्म। वह फिर कह देते 84 लाख जन्म। कितना बड़ा गपोड़ा है। कल्प की आयु ही लाखों वर्ष कह दी है। बाप कहते हैं यह है ही 5000 वर्ष का ड्रामा। तो यह भी अज्ञान ठहरा ना। भक्ति मार्ग है ही अज्ञान मार्ग। ज्ञान सागर तो एक ही शिवबाबा गाया जाता है। वह हैं हद के बाबाएं। यह है बेहद का बाबा। हद के बाबा होते भी बेहद के बाबा को याद करते हैं, जबकि दुःखी होते हैं। पुनर्जन्म लेते–2 दुनियां पुरानी तमोप्रधान हो जाती है। तब फिर बाप आते हैं। सेकण्ड में जीवन मुक्ति मिलती है। किससे? बेहद के बाप से। तो ज़रूर अभी जीवन बंध में हैं, पतित हैं। फिर पावन बनना है। यह तो सेकण्ड की बात है। ज्ञान एक ही सेकण्ड का है; क्योंकि पढ़ाई तो तुम पढ़ते हो। वह सभी मनुष्य मनुष्य को पढ़ाते हैं। पढ़ती तो आत्मा ही है; परंतु देह अभिमान कारण अपन को आत्मा भूलकर कह देते हैं, हम फलाना मिस्टर हैं यह हैं। वास्तव में है आत्मा। आत्मा मिस्टर और मिसेज बनती है पार्ट बजाने लिए। यह भूल जाते हैं। नहीं तो आत्मा ही पार्ट बजाने कोई क्या बनती है, कोई क्या बनती है। बाप समझाते हैं अभी यह पुरानी दुनियां बदल, नई दुनियां बननी है। वर्ल्ड की हिस्ट्री, जॉग्राफी रिपीट ज़रूर होनी है। नई दुनियां है सतोप्रधान। घर भी पहले नया होता है तो कहेंगे सतोप्रधान। फिर पुराना जड़–जड़ीभूत तमोप्रधान होता है। यह बेहद का नाटक वा सृष्टि के चक्र का नॉलेज समझना है; क्योंकि यह पढ़ाई है, भक्ति नहीं है। भक्ति को पढ़ाई नहीं कहा जाता है; क्योंकि भक्ति में एम ऑबजेक्ट कुछ होती नहीं। जन्म–जन्मांतर वेद–शास्त्र आदि पढ़ते रहो। यहां तो दुनियां को बदलना है। सतयुग–त्रेता में भक्ति नहीं थी। भक्ति शुरू होती है द्वापर से। तो यह बाप बैठ रूहानी बच्चों को समझाते हैं। इसको कहा जाता है रूहानी नॉलेज अथावा ज्ञान। रूहानी नॉलेज कौन सिखलावेगा? सुप्रीम रूह ही बतावेंगे यानि परमपिता। वह तो सभी का है ना। लौकिक बाप को कब परमपिता नहीं कहेंगे। पारलौकिक को परमपिता कहा जाता है। वह है परमधाम में रहने वाला। बाप को याद भी ऐसे करते हैं, हे गॉड फादर, हे ईश्वर। वास्तव में उनका नाम है एक; परंतु भक्ति में अनेक नाम दे दिये हैं। भक्ति का फैलाव बहुत है। वह सभी है मनुष्य मत। अभी मनुष्य को चाहिए ईश्वरीय मत। श्री–श्री ईश्वरीय मत। श्री–2 108 की माला तो बनती है ना। यह प्रवृत्ति मार्ग की माला बनती है। निवृत्ति मार्ग वाले श्री–2 का टाईटिल अपने ऊपर लगाते हैं; परंतु अर्थ कुछ नहीं समझते हैं। पतित बुद्धि हैं ना। बिल्कुल बेसमझ हैं। बाबा तुमको भी कहते हैं तुम कितने बेसमझ थे। सबसे जास्ती बेसमझ तुम बनते हो। पुनर्जन्म लेते–2, सीढ़ी उतरते इनसॉलवेन्ट बन जाते हैं। बुद्धि इनसॉलवेन्ट बन जाती है तो मनुष्य दिवाला मार देते हैं। मनुष्य मात्र जो 100% सॉलवेन्ट थे सो इस समय इनसॉलवेन्ट हैं। बुद्धि बिल्कुल ही मारी हुई है। यह ताला किसने लगाया है? गॉडरेज का ताला लग जाता है भक्ति मार्ग में। कुछ भी नहीं समझते। भक्ति किसकी करते हैं उनका भी पता नहीं है। अच्छा ल.ना. कौन है? देवताएं तो हैं; परंतु कहां से आये? कहां गये? कुछ पता है? इसको कहा जाता है गुड्डियों की पूजा। बाप कहते हैं बिल्कुल बेसमझ जैसे छोटे बच्चे होते हैं ना। छोटे बच्चे को महात्मा कहा जाता है। वह महात्माएं तो फिर भी भ्रष्टाचार से पैदा होते हैं। फिर बड़ा होकर सन्यास करते हैं। छोटे बच्चे को तो विकार का पता ही नहीं। अभी कलियुग में तो देखो 8/9 वर्ष के बच्चों को भी विकार का पता पड़ जाता है। घोर अंधियारा है ना। घोर सोझरा सतयुग को कहा जाता है। घोर–अंधियारा है कलयुग। यह तो चला जाता है। राजाई और गधाई। कहां तुमको हीरोइन–हीरो का महल। कहां अभी इनसॉलवेन्ट बन पड़े हो। भारत जितना नम्बरवन में था उतना और कोई खण्ड नहीं। भारत की बहुत महिमा है। सभी धर्म वालों का भारत सबसे बड़ा ते बड़ा तीर्थ स्थान है; परंतु ड्रामा अनुसार गीता का खण्डन कर दिया है। जिस गीता के ज्ञान से बाप बैठ नई दुनियां बनाते हैं। गीता शास्त्र नहीं बनात। गीता सुनाने वाले पुरानी से नई दुनियां बनाते हैं और सबकी सद्गति कर देते हैं। भारत सबसे ऊँच ते ऊँच और बहुत धनवान था। यह उल्टा झाड़ है। उनका बीज है ऊपर में। उसको

वृक्षपति कहा जाता है। वृहस्पत की दशा बैठती है ना। बाप समझाते हैं मैं वृक्षपति आता हूँ तो भारत पर वृस्पत की दशा बैठती है। ऊँच बन जाते हैं फिर रावण आता है तो राहु की दशा बैठ जाती है। भारत का क्या हाल हो जाता है। वहां तो तुम्हारी आयु भी बड़ी रहती है; क्योंकि पवित्र हो। आधा कल्प में तुम 21 जन्म लेते हो। तो अभी बाप समझाते हैं बच्चे सतोप्रधान बनना है; इसलिए मामेकं याद करो। सभी धर्म वाले इस समय तमोप्रधान हैं। तुम सभी को यह ज्ञान दे सकते हो। आत्माओं का बाप तो एक ही है। सभी ब्रदर्स हैं; क्योंकि हम सभी आत्माएं एक बाप के ही बच्चे हैं। भल कहते हैं हिंदु–मुस्लिम भाई–2; परंतु अर्थ नहीं समझते। आत्मा कहती है राइट है। सभी ब्रदर्स का बाप एक है वह आते हैं ज़रूर। वर्सा देना ही है बाबा को। वह आते ही हैं भारत में। शिव जयन्ती मनाते हैं; परंतु वह कब आया था यह किसको भी पता नहीं है। अंधश्रद्धालु हैं ना। रावण सम्प्रदाय आसुरी सम्प्रदाय। तुम्हारी युद्ध है इन 5 विकारों से। काम तो तुम्हारा नम्बरवन दुश्मन है। रावण को जलाते हैं; परंतु वह कौन है, क्यों जलाते हैं, कुछ भी पता नहीं है। तुम जानते हो यह 2500 वर्ष से हमारा दुश्मन बना है। दिन–प्रतिदिन यह दुश्मन बड़ा तीखा हो जाता है। द्वापर से लेकर तुम नरचे (नीचे) उतरते–2 इस समय पतित बन गये हो। एक तरफ शिव को याद कर पूजते हैं। दूसरे तरफ फिर कहते हैं कि सर्वव्यापी है। कुत्ते–बिल्ले आदि सब में हैं। जिसने तुमको विश्व का मालिक बनाया उनको फिर माया के चक्र में आकर गाली देते हो। बाप कहते हैं मीठे–2 बच्चों तुम मुझे अनगिनत जन्मों में ले गये हो। मुझे कण–2 में ठिक्कर–भित्तर में ठोक देते हो। गालियां भी देते हो। कच्छ अवतार, मच्छ अवतार। यह भी ड्रामा बना हुआ है। बिल्कुल ही तमोप्रधान बन जाते हैं। बेहद की ग्लानी में चले जाते हैं। कितने पापात्मा बन पड़े हैं। रावण राज्य है ना। यह भी तुम जानते हो। इस समय सभी भक्तियां है। सभी की सद्गति करने वाला कौन है। यह कोई नहीं जानते। शास्त्रों में तो दंत कथाएं लिख दी हैं। सुनने वाले मनुष्य भी सत्य–2 करते रहते। बाप कहते हैं यह सभी असत्य। सत्य कहने वाला तो एक ही बाप है। रावण को झूठ कहेंगे। सच्च खण्ड स्थापन करने वाला सच्चा बाबा है। रावण को बाबा नहीं कहा जाता है। यह तो तुम समझते हो 5 विकार हरेक में हैं। विकार से ही पैदा होते हैं; इसलिए भ्रष्टाचारी कहा जाता है। सतयुग में विकार का नाम नहीं। देवताओं को कहा ही जाता है सम्पूर्ण निर्विकारी। देवताएँ जो पूज्य थे वही फिर पुजारी बने हैं। वह कह देते हैं आत्मा सो परमात्मा। परमात्मा सो आत्मा। बाप कहते हैं यह भूल है। इनका भी अर्थ बच्चों को समझाया है। पहले–2 तो आत्मा निश्चय करना है। हम आत्मा इस समय ब्राहमण कुल के है। सर्वोत्तम कुल। ब्राह्मणों की डिनायस्टी नहीं है। चोटी है ब्राह्मणों की। तुम ब्राह्मण हो ना। सबसे ऊपर में है शिवबाबा। भारत में ही विराट रूप बनाते हैं; परंतु उसमें न ब्राह्मणों की चोटी है न चोटियों का बाप है। अर्थ कुछ नहीं समझते हैं। त्रिमूर्ति का भी अर्थ नहीं समझते हैं। नहीं तो भारत का कोट ऑफ आर्मस त्रिमूर्ति शिव का होना चाहिए। अभी तो वह कांटों का जंगल है तो जंगली जनावरों का कोर्ट ऑफ आर्मस बना दिया है। जिसमें फिर लिखा है सत्य मेव ज्यते। सतयुग में तो दिखाते हैं शेर, बकरी भी इकट्ठे जल पीते थे। सत्य मेव ज्यते माना विजय हो। सभी दूध पानी रहते हैं। लून पानी नहीं। रावण राज्य में है लून पानी। रामराज्य में क्षीर खण्ड हो जाते हैं। इनको कहा ही जाता है काँटों का जंगल। एक/दो को पहला नम्बर का काँटा मारते हैं विकार का। बाप कहते हैं काम विकार महाशत्रु है। यह आदि–मध्य–अंत दुख देने वाला है। नाम ही है रावणराज्य। बाप कहते हैं इन पांच विकारों पर जीत पहन जगत जीत बनो। यह अंतिम जन्म निर्विकारी बनो। तमोप्रधान पतित बने हो तो फिर सतोप्रधान पावन बनो। गंगा कोई पतित–पावन नहीं है। शरीर के(का) मैले(ल) तो घर में पानी से भी उतार सकते हो। आत्मा तो साफ हो नहीं सकती; परंतु पत्थर बुद्धि यह भी समझते नहीं हैं। भक्ति मार्ग के कितने ढेर के ढेर गुरु हैं।

सद्गुरू तो एक ही है। वह गुरू लोग सद्गुरू नहीं हैं। न टीचर हैं। टीचर के पास तो एमऑबजेक्ट है कि हम क्या बनेंगे। यह सुप्रीम बाप भी है तो सुप्रीम टीचर भी है। सुप्रीम सद्गुरू भी है। सुप्रीम बाप, टीचर, सद्गुरू एक ही हैं। वही सृष्टि के आदि, मध्य, अंत का नॉलेज देते हैं। जिस नॉलेज से तुम क्या बनते हो। यह एमऑबजेक्ट सामने खड़ी है। अभी 84 का चक्र पूरा किया है। अभी वापस जाना है। अभी तुम्हारी आत्मा और शरीर दोनों ही पतित हैं। आत्मा भी झूठी तो शरीर भी झूठा। मनुष्य मात्र सभी वर्थ नॉट अपेनी है। पाउन्ड थे। अभी ग़रीब बन पड़े हैं। बाप कहते हैं मैं भी ग़रीब निवाज़ हूँ। आता भी भारत में हूँ। आत्मा ही पारलौकिक बाप को पुकारती है। आत्मा जानती है परमपिता परमात्मा हमारा बाप है। बाप समझाते हैं मीठे–2 बच्चों तुम मुझ बाप को पुकारते हो रहम करो, दुःख हरो। दुःख में ही सभी याद करते हैं। सुख में तो कोई भी याद नहीं करते हैं। भक्ति मार्ग में कितने शास्त्र आदि पड़ते हैं। अर्थ कुछ भी नहीं समझते हैं। तुम हो सबसे पुराने भक्त। तुम ने ही भक्ति शुरू की; परंतु अव्यभिचारी शुद्ध भक्ति। फिर चाहिए अव्यभिचारी शुद्ध ज्ञान। वह तो ज्ञान सागर। शिवबाबा ही दे सकते हैं। बाकी वह सभी हैं भक्ति मार्ग के शास्त्रों की अथॉरिटी। शिवबाबा को भी अथॉरिटी कहते हैं; परंतु वह कोई शास्त्र थोड़े ही पढ़ते हैं। वह तो नॉलेजफुल है। कहते हैं इन सभी शास्त्रों का सार बताता हूँ। तुम्हारे बुद्धि में सारा सृष्टि का चक्र है; इसलिए सीढ़ी भी बनाई है। बाकी भक्ति मार्ग के शास्त्रों में तो कितनी नॉनसेंन्स हैं। बड़े ते बड़ा हिंसक कृष्ण को बना दिया है। जो नम्बरवन स्वर्ग़ का प्रिंस। उनको डबल हिंसक बना दिया है। देवताएं हैं डबल अंहिसक। वह फिर डबल हिंसक बना देते हैं। यह भी कल्प–2 चलता आया है। बाप आकर स्वर्ग़ की स्थापना करते हैं। फिर स्वर्ग़ से पुनर्जन्म लेते–2 नीचे आते हो। सभी तो 84 जन्म ले न सके। कायदा नहीं। मिनिमम है एक। मैक्सिमम है 84। अभी तुम बच्चे हो मैसेंजर, पैगम्बर, पैगाम पहुँचाने वालो। हरेक को बोलो पारलौकिक बाप कहते हैं तुम्हारी आत्मा जो सतोप्रधान थी अभी तमोप्रधान बन गई है। अभी फिर मुझे याद करो तो पाप भस्म हो जावेंगे। इनको योग अग्नि कहा जाता है। एक बाप को ही याद करना है। यह है पुरानी दुनियां। अभी चलना है नई दुनियां में। तुम जानते हो बाबा हमारे लिए सतयुग की स्थापना कर रहे हैं। यह बुद्धि में है। जब तक हम सतोप्रधान बने तब तक तो यहां ही रहना है। तमोप्रधान कोई जा न सके। यहां ही सतोप्रधान बनना है। दैवी गुण धारण करनी है। कोई भी अवगुण न रहना चाहिए। देवताओं को कहते ही हैं सर्व गुण सम्पन्न। सम्पूर्ण निर्विकारी। अंहिसक मर्यादा पुरुषोत्तम। देवताओं के आगे अपन को कहते हैं हम पापी विकारी हैं। अभी तुमको पता पड़ा है। हम भी ऐसे ही थे। अभी बाप द्वारा हम ऐसे बनते हैं। फिर सो देवता बनते हैं। बाप कहते हैं मुझे याद करो तो पावन बन जावेंगे। मूल बात ही है अपन को आत्मा समझ बाप को याद करो। देह अभिमान छोड़ दो। धंधा आदि व्यापार भल करो। बच्चों पास भी भल रहो; परंतु बुद्धि में यह रहता है यह सभी कब्र दाख़िल होनी हैं। इस दुःखधाम को भूल जाना है। याद करना है शान्तिधाम और सुखधाम को। कितना सहज है। क्या यह भी याद नहीं कर सकेंगे। बाबा सा. करते हैं तुम देवता बनेंगे तो फिर स्वर्ग़ में होंगे। अभी तो है नर्क। इनको भूलना है। मुश्किल की बात नहीं है; परंतु माया ऐसी है जो याद करने न देती। बाबा का बनने नहीं देती हैं। माया के साथ ही युद्ध चलती है। बुद्धि योग बाप के साथ टूटने से फिर कुछ न कुछ पाप विकर्म ज़रूर होते हैं तुम बच्चे अभी ब्राह्मण बने हो। (फिर) बनेंगे देवता। शान्तिधाम में जाकर फिर सुखधाम में आवेंगे। देवता बनेंगे। ब्राह्मण देवता से भी ऊँच ठहरे। तुम्हारा धंधा है सभी भ्रष्टाचारियों को श्रेष्ठाचारी बनाना। फादर सोज़ सन। सन शोज़ फादर। बच्चे भी फिर वही सेवा करे। अच्छा मीठे–2 रूहानी बच्चों को रूहानी बाप व दादा का याद प्यार गुडमॉर्निंग। रूहानी बच्चों को रूहानी बाप का नमस्ते। नमस्ते।

स्वर्ग़ की बादशाही याद है?